परिवर्तन : पूर्वांचल में सहकारिता का नया मॉडल बनेगा 'अमूल डेयरी'

वाराणसी, विशेष संवाददाता। करखियांव औद्योगिक पार्क में अमूल डेयरी के 'काशी बनास संकुल' के शुभारंभ होने के साथ ही पूर्वांचल में श्वेतक्रांति का श्रीगणेश हो चुका है। दो वर्ष पूर्व शिलान्यास के बाद से ही बनास डेयरी संकुल गांवों में पशुपालन व डेयरी उद्योग की वैज्ञानिक तालीम किसानों को दे रही है, जिससे डेयरी उद्योग के साथ पशुपालन क्षेत्र में भी बदलाव अभी से दिखने लगा है। अमूल की ओर से शुरू पूर्वांचल में सहकारिता का यह नया मॉडल किसानों की समृद्धि बढ़ाएगा।

वाराणसी-जौनपुर राजमार्ग पर स्थित करखियांव औद्योगिक पार्क में गुरुवार को अमूल डेयरी का उद्घाटन पीएम मोदी के हाथों हुआ। इस मौके पर 50 हजार से अधिक पूर्वांचल के गोपालक और किसानों की भागीदारी रही। बनास डेयरी के चेयरमैन शंकर भाई चौधरी के मुताबिक, वर्तमान में यूपी में बनास डेरी का दूध का कारोबार 48 जिलों के 4,600 गांवों में फैला है। अगले साल तक दूध की आवक का विस्तार 70 जिलों के 7,000 गांवों तक पहुंच जाएगा, जिसमें पूर्वांचल में 15 नए जिलों का विस्तार भी शामिल है।

लौंगलता, पेड़ा सहित दो दर्जन मिठाइयां भी बनेंगी

अमूल प्लांट में दूध उत्पादों की पैकेजिंग के साथ ही प्रतिदिन 10,000 किलोग्राम क्षमता की पारंपरिक भारतीय मिठाइयों के निर्माण की सुविधा स्थापित की है। प्लांट में लाल पेड़ा, लौंगलता, बेसन के लड्डू, मोतीचूर के लड्डू, रस मलाई, रबड़ी, काजू कतली, मिल्क केक, रसगुल्ला और गुलाबजामुन का निर्माण होगा।

247 लीटर से शुरू हुआ सफर साढ़े तीन करोड़ पर पहुंचा

गुजरात के आणंद से 1946 में 247 लीटर दूध से शुरू हुआ अमूल का सफर आज 3.5 करोड़ लीटर पर पहुंच गया है। अमूल ने इन 78 वर्षों में जो कुछ हासिल किया, ऐसे उदाहरण कम ही मिलते हैं।

1.6 करोड़ दुग्ध उत्पादक अपना दूध डेयरी सहकारी समितियां को पहुंचाते हैं

3.5 करोड़ लीटर से ज्यादा दूध का संग्रहण रोजाना किया जाता है

222 जिला सहकारी संघों में दूध को प्रोसेस किया जाता है

- 1,85,903 डेयरी सहकारी समितियां हैं देशभर में अमूल की
- 28 राज्य मार्केटिंग संघों द्वारा मार्केटिंग की जाती है

इस तरह हुई शुरुआत

1 दुग्ध उत्पादक बिचौलियों और व्यापारियों की शोषणपूर्ण नीतियों से परेशान थे। इसके चलते यह एक सहकारी समिति की जरूरत महसूस की गई। उद्देश्य रखा गया कि सहकारी समिति ऐसी हो जिसमें दुग्ध उत्पादकों के ही प्रतिनिधि हों और यह उनके हितों का ध्यान रखे। इसके बाद अमूल सहकारी संस्था का गठन किया गया था।

2 1946 में कंपनी को रजिस्टर किया गया। स्थानीय व्यापार कार्टेल द्वारा अपनाई जाने वाली शोषक व्यापार नीतियों ने सहकारी आंदोलन को गति दी। 1950 से डेयरी चलाने का काम श्वेत क्रांति के जनक डॉ. वर्गीज कुरियन और संस्थापक अध्यक्ष त्रिभुवनदास पटेल के कंधों पर रहा।

3 सहकारी यूनियन की स्थापना के साथ ही अब किसानों के पास डेयरी का स्वामित्व था। उनके चुने हुए प्रतिनिधियों ने ग्रामीण समाजों और जिला संघ का प्रबंधन किया। उन्होंने पेशेवरों को डेयरी संचालन और व्यवसाय प्रबंधन के लिए नियुक्त किया। अमूल मॉडल ने भारत को दुनिया में सबसे बड़े दूध उत्पादक के रूप में उभरने में मदद की है।

क्या है अमूल

डेयरी सहकारी संस्था। गुजरात के आणंद में स्थित। अमूल ब्राड गुजरात को-ऑपरेटिव मिल्क मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड (जीसीएमएमएफ) के अधीन है।

- अमूल : आनंद मिल्क यूनियन लिमिटेड
- स्थापना वर्ष : 1946

अमूल का कारोबार

(आंकड़े करोड़ रुपये में)